

— समव *beschütten, überdecken, überfluthen*: आश्रमपदं कुसुमैः समवाकिरन् *Bhāg. P. 8, 18, 10. भीष्मम् — शरैः — समवाकिरत् MBh. 1, 4, 115. 3, 821. 11959. पुष्पवृष्टयः । मुरासुरगणान्सर्वान्समत्तात्समवाकिरन् 1, 1129. R. 3, 38, 23. मरुता रथसेन रथचारेण चाप्युत । वैकर्तनं परीप्सतो गन्धर्वान्समवाकिरन् ॥ MBh. 3, 14899.*

— आ 1) *hinstreuen, reichlich verleihen*: आ नैः सोमं पर्वमानः किरा वसुं *RV. 9, 81, 3. आ यथा मन्दमानः किरासि नः Vāṇ. 1, 4. विचिन्वन्तीमाकिरतीमप्सरा साधुदेविनीम् AV. 4, 38, 2. — 2) überdecken, erfüllen; partic. आकीर्णं überdeckt, erfüllt, voll, rings umgeben AK. 3, 2, 35. H. 1473. आकीर्णं त्रैवे Duṛtas. 73, 13. न तापसैर्ब्राह्मणैर्वा व्योभिरपि वा श्रमिः । आकीर्णं भित्तुर्कैर्वान्यैरागारमुपसंभ्रजेत् ॥ M. 6, 51. MBh. 3, 8320. Pañkāt. 188, 13. Ragh. 1, 50. BRAHMA - P. in LA. 30, 2. दानवाकीर्णं तद्द्वैत्यपुरम् *Arś. 6, 7. N. 12, 2. Viçv. 1, 6. R. 3, 7, 2. Suçr. 1, 23, 5. Pañkāt. I, 72. 420. Çāk. 107. Vet. 6, 5. कण्टकाकीर्णं (क्षितिपति) Rāga-Tar. 3, 321. — Vgl. आकर, आकुल.**

— अपा *von sich stossen, in Stich lassen, verschmähen*: गता ह्यस्मानपाकीर्य सर्वे द्वैतवनात् *MBh. 4, 87. षट्द्वैतपाप्याकीर्णस्तस्मिन्वै कानने ऽभवत् (पादपः) 1, 2851. तदप्याकीर्णम् Kumāras. 5, 28.*

— अवा *bestreuen, überschütten*: कदा — राघवौ लज्जैरवाकिरिष्यति *R. Gorra. 2, 42, 14. Bei SCHL. 2, 43, 13: अवकिरिष्यति.*

— व्या, *partic. व्याकीर्णं durch einander geworfen, verworren*: ०केशर *Pañkāt. I, 207. — Vgl. व्याकुल.*

— समा *überschütten, überdecken, erfüllen*: कृपांश्च स समाकिरत् (शरैः) *MBh. 3, 797. समाकीर्णः पिपोलिकः 10318. R. 1, 6, 24. मृगद्विजसमाकीर्णं MBh. 3, 8328. N. (Bopp) 12, 38. R. 3, 33, 23. Viçv. 4, 12. — Vgl. समाकुल.*

— उद् 1) *aufwirbeln*: वायुहृत्किरश्च रजो मरुत् *R. 6, 90, 26. रजोभिस्तुरगोत्कीर्णः Ragh. 1, 42. — 2) ausgraben, aushölen*: वलगम् *VS. 5, 23. Çat. Br. 3, 5, 4, 3. 2, 1, 4, 7. 8, 7, 2, 16. परिखाम् MBh. 1, 5813. उत्करमुत्किरति Ait. Br. 6, 3. पुरुषायाममात्रा च भूमिमुत्कीर्य खादिरैः Suçr. 2, 182, 3. उत्कीर्णसमाग्रः (पूषः) Kāt. Çr. 14, 1, 22. सुचावनुत्कीर्णं 26, 2, 10. — 3) eingraben, einschneiden*: उत्कीर्णा इव वासपाष्टिषु निशानिद्रालसा वर्द्धिणः *Vikr. 43. मतेभर्द्दोत्कीर्णव्यक्तविक्रमलक्षणम् (त्रयस्तम्भम्) Ragh. 4, 59. — Vgl. उत्कार, उत्कार, उत्कारिका, उत्किर.*

— समुद् *durchbohren*: मणौ वज्रसमुत्कीर्णे *Ragh. 1, 4. अनाविद्ध (रत्न) = असमुत्कीर्णं Sch. zu Çāk. 43.*

— उप 1) *hinstreuen, hinwerfen; bestreuen, beschütten*: उत्तरतः सिकता उपकीर्णा भवति *Çat. Br. 14, 1, 3, 14. नोपकिरत्युत्तरवेदिम् 2, 3, 1, 18. 2, 6. तमाखूत्कार उपकिरति 6, 2, 10. 4, 5, 2, 15. Kāt. Çr. 8, 5, 28. 24, 5, 29. पुष्पोपकीर्णं MBh. 3, 11886. रत्नोपकीर्णा वसुधाम् 13, 3162. Vgl. उपकिरण. — 2) उपस्किरति *spalten* (लवने, द्वेदः); *verletzen* (हिंसायाम्) *P. 6, 1, 140. 141. Vop. 13, 3. उपस्कारं लुनति = चित्तिप्य लुनति, उपस्कीर्णं कृतं ते वृषल भूयात् = हे वृषल ते तथा चित्तेपो ऽस्तु यथा हिंसामनुवद्भाति P., Sch.**

— नि *s. निकर.*

— विनि 1) *auseinanderwerfen, zerstreuen*: विनिकीर्णास्त्र *R. 5, 78, 19. विनिकीर्णधनुर्वीणां दृष्ट्वा निरुतमर्जुनम् MBh. 3, 17289. तदिदं ते धनुर्लं विनिकीर्णं (hingeworfen oder zersplittert, zerbrochen) मरुतिले R. 6, 8, 19. विनिकीर्णः (ausgestreckt liegend) — भीमवलादृतः (रातसः) MBh. 3, 458.*

— 2) *überdecken u. s. w.*, *विनिकीर्णं überdeckt, erfüllt, besetzt*: सिद्धचारणसंघेय विनिकीर्णः (मरुतिलः) *R. 4, 41, 33. धर्मैः कुसुमानुसारिभिर्विनिकीर्णा (nach den Corrigg. परिकीर्णा zu lesen) परिवादिनी मुनेः Ragh. 8, 35. — 3) von sich stossen, in Stich lassen*: क्व नु मा तदधीनत्रीवितो विनिकीर्य क्षणभित्तौरुद्धः । — अस्मि विदुतः *Kumāras. 4, 6.*

— संनि, संनिकीर्ण *ausgestreckt*: विरक्षयने संनिकीर्णैकपार्श्वम् *Megh. 87.*

— परा *von sich geben, einbüßen, verlieren*: राज्यमत्तैः पराकीर्य *MBh. 4, 1369.*

— परि 1) *umherstreuen; rings bestreuen*: सोमक्रयपायाः पदं जघनेन गार्हपत्यं परिकिरति *Çat. Br. 3, 6, 2, 4. धृष्टिभ्यां भस्मना परिकीर्याङ्गैश्च Kāt. Çr. 26, 3, 9. परिकीर्णं umgeben, umschwärmt*: प्रभित्तिमिव मातङ्गं परिकीर्णं करेणुभिः *MBh. 4, 585. R. 5, 14, 28. Ragh. 8, 35 (s. u. विनि). — 2) übergeben*: मरुतौ मरुच्छः परिकीर्य सुना *Ragh. 18, 32. — Vgl. परिकर. — अनुपरि längs eines Gegenstandes umherstreuen Kauç. 36.*

— प्र 1) *ausstreuen, hinwerfen*: ता नागौ प्रकिरियुः *Çat. Br. 4, 4, 2, 12. 13, 7, 4, 9. अश्मनस्त्रोत्खीन्प्रकिरति 8, 4, 3. Kāt. Çr. 5, 3, 37. Kauç. 88. पानि (माल्यानि) प्रकीर्येह MBh. 3, 10066. हिरण्यं च सुवर्णं च वासांसि विविधानि च । प्रकिरतो जना मार्गे नृपतेरप्रतो ययुः ॥ R. 2, 76, 15. Suçr. 1, 371, 10. 2, 384, 19. फलं प्रकीर्यात् (!) 325, 15. नाराजको जनपदे वीजमुष्टिः प्रकीर्यते R. 2, 67, 9. प्रकीर्णं *ausgestreut, hingeworfen, umherliegend, zerstreut, auseinandergeworfen Nir. 9, 23. MBh. 4, 1676. 13, 5149. Arś. 6, 2. R. 1, 77, 7. 3, 67, 18. 6, 76, 13. Daç. 2, 26. Suçr. 1, 149, 12. Māñk. 63, 11. Çāk. 73, v. I. Prab. 73, 12. vertheilt, verschleudert*: प्रकीर्णधनचित्तितवीतनिद्र *Duṛtas. 74, 17. zerstreut, aufgelöst (von Haaren) MBh. 3, 11755. 12259. R. 6, 2, 30. Suçr. 1, 106, 3. Buāg. P. 5, 5, 28. 7, 2, 30. प्रकीर्णास्त्रमूर्धनं MBh. 3, 842. प्रकीर्णं = नानाप्रकारमिश्रितं mannigfach gemischt*: प्रकीर्णः पुष्पाणां हरिचरणयोरञ्जलिरयम् *Venis. im ÇKDr. u. प्रकीर्णं. प्रकीर्णमैयुधं in gemischter Ehe lebend MBh. 13, 6735. प्रकीर्णा वाक् eine verworrene Rede H. 68. — 2) hervorquellen, hervorspringen*: सदाहं प्रकिरत्यस्त्रं यस्याः सा लोहिततरा *Suçr. 2, 396, 21. कामसेजनार्थाय ऋषिपुत्रस्य धीमतः । सर्वतः प्रकिरति स्म ललमाना वराङ्गनाः ॥ R. 1, 9, 19. — 3) pass. zerrinnen*: अरक्ष्यमाणं शतथा प्रकीर्येत *MBh. 3, 11767. West. u. 4. कर.**

— विप्र, *partic. विप्रकीर्णं auseinandergeworfen, zerstreut*: स्रजश्च विविधाश्चित्रा विप्रकीर्णा ददर्श सः *R. 5, 14, 53. 32, 31. विप्रकीर्णा तु तां दृष्ट्वा रातसानां मरुचमम् 3, 30, 25. वर्द्धिणः 5, 82, 13. दिवसं विप्रकीर्णानामाहारार्थं च — समागतानां नीटेषु पतिणां श्रूयते स्वनः 3, 5, 5. विप्रकीर्णशिरोरुहं mit zerstreuten, aufgelösten Haaren MBh. 3, 401. Buāg. P. 8, 12, 29. चित्रकीर्णजटाकृत 1, 18, 27. zersplittert daliegend*: परिवो विप्रकीर्णस्ते वाणैरिह्नः समस्ततः *R. 6, 95, 39. ausgestreckt liegend*: विरथं विप्रकीर्णं च भग्नस्त्रायुधं तथा (यो कृत्ति) *MBh. 3, 730. विरक्षयने विप्रकीर्णैकपार्श्वम् Megh. 87, v. I. ausgedehnt, weit*: विप्रकीर्णं श्रुमे देशे *R. 3, 5, 8. विप्रकीर्णमिवाकाशम् 4, 31, 23.*

— संप्र, असंप्रकीर्ण *unvermengt Çāñk. Çr. 18, 24, 25.*

— प्रति und mit vorgesetztem स् *verletzen, beschädigen* (हिंसायाम्) *P. 6, 1, 141. Vop. 13, 3. प्रतिस्कीर्णं कृतं ते वृषल भूयात् P., Sch. (vgl. u. उप). तया — उरोविदारं प्रतिचस्करे नखैः Çc. 1, 47.*